रात्री क्लास ओम शान्ति 9-4-67

बाप बच्चों को समझाते है। है तो सभी बच्चे बाप के। परन्तु कोई पूरा जानते है कोई अधूरा जानते है। आगे चल जानते चले जावेंगे। कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। कोटों में कोऊ जानते है क्यों गुप्त वेश में थे। बच्चे जानते है कि हमको फिर बाप मिला है। उनकी श्रीमत पर चल कर हम वर्सा ले रहे है। बाप स्वर्ग की स्थापना करते है तो जरूर स्वर्ग का मालिक बनाते होंगे। हम फिर से इस बाबा पास आये है। जैसे हम इस शरीर में है वैसे बाबा भी इस शरीर में है। कहते है मैं ज्ञान सागर हूं तब तो ज्ञान देता हूं। यह 84 जन्मों का ज्ञान कोई बता नही सक्ते। सृष्टी की आद मध्य अन्त का ज्ञान सृष्टी का बीज रूप ही जाने। ऊंच ते ऊंच बाप जरूर ऊंच ते ऊंच बनाते होंगे। पहले भी हमको बनाया था। भारत में कल्प-2 आते है तब तो उनकी जयन्ति मनाते है। शिव बाबा नर्क में आते है स्वर्ग रचने। //बाबा कहते है मैं स्वर्ग में नही आता हूं नर्क में ही आता हूं। मुझे बुलाते ही है कि पतित पावन आओ। पावन बना कर पावन सृष्टी का मालिक बनाओ। बाप कहते है मैं सबका बाप हूं तो सबको वर्सा देना पड़े। इस समय भी दुःखी है। दुनिया का विनाश होगा। जरूर दुःख के पहाड़ गिरेंगे। इतने करोड़ सब खत्म हो जावेंगे मच्छरों की तरह। कलियुग और सतयुग में रात दिन का फर्क है। सतयुग में बहुत थोड़े होते है। आत्मायें सब भागेंगी। आगे चल कर तुम बच्चों को यह भी सा० होगा। तुम बच्चों को मालूम है अब घर जाना है। अब बाप आये है सबको ले जाने के लिये। कहते है मैं बच्चे काम चिता पर बैठ कर भस्म हो गये है अब उन पर ज्ञान वर्षा बरसाता हूं। नारद भी भक्त था बोला हम स्वर्ग में चल सक्ते है? लक्ष्मी को वर सक्ते है? तो बोले अपनी शक्ल तो देखो। //बाबा कहते है अपने अन्दर देखो कोई आसुरी गुण तो नही है। हमारे में खान पान आद का कोई अवगुण तो नही है। अब देवताओं जैसा बनना है। देखना चाहिये सारे दिन में किसीको दुःख तो नही दिया। कितना समय बाप को याद किया? कितनों को बाप का परिचय दिया। यह अन्तिम जन्म है अब पवित्र बनना है। अब सभी की चढ़ती कला होनी है। //बाप कहते है रोज अपना पोतामेल रखो कि कोई से लूण पानी तो नही हुआ है? ईश्वरिय सन्तान हो ना। वहां तो शेर-बकरी भी लूण पानी नही होते है। कुछ हो भी तो बाप बैठे है सभी मत भेद निकाल देंगे। सभी का मत भेद बाप आकर निकालते है। वहां पर मत भेद होता ही नही। बाप को बताने से बाबा एकमत कर देंगे। नही तो कहेंगे बाप यही सिखाते है। निन्दा करवा देंगे। सतगुरू का निन्दक ठौर ना पावे। सतगुरू तो एक ही है। बाकी है भक्ति के गुरू। बाप के लिये उल्टा बता देते है। तुम यहां आये हो बाप से वर्सा लेने। विश्व का मालिक बनते हो। आधा कल्प कोई राज्य छीन नही सक्ते। आधा कल्प बाद फिर दूसरे धर्म आते है। तो ताली बजनी शुरू हो जाती है। कहीं भी जाओ बैज लगा हुआ हो उस पर समझाओ। तुम ईश्वरिय मिशन हो ना। तुम हो रूहानी सैलवेशन आर्मी तो नशा होना चाहिये ना। यह भी तुम जानते हो आग जरूर लगनी है। चिंगारी लगी हुई है फिर सारी दुनिया में फैल जावेगी। //बाप कहते है चलो अपने घर। इस छी-2 दुनिया से पुरानी दुनिया से वैराग है। क्योंकि बादशाही स्थापन होती है। और कोई राजधानी नही स्थापन करते। //तुम जो कुछ देते हो शिव बाबा को देते हो इनको नही देते हो। इसने भी सब कुछ बाप को दे दिया कि बच्चों के काम में आ जावे। जो कुछ देना हो बाप को दो। तो बाप फिर गरीबों को दे देंगे। देह भी दे दो। बाकी अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप तो दाता है सिर्फ युक्ति ये बताते है। इससे ममत्व मिटा कर नई दुनिया में ममत्व रखो। यह पुराना चोला छोड़ना है। अब हम पावन सम्बन्ध में जाते है पतित सम्बन्ध शरीर सहित छोड़ते है। पुराना चोला है परन्तु इससे फिर नया मिलता है। इसलिये ही इनकी भी सम्भाल रखनी है। भोजन भी पवित्र खाना है। मगर बच्चों में अभी पूरी समझ ना होने कारण एक दो से नफरत करते रहते है। आपस में भी और बाप से भी नफरत लाते रहते है तो वो क्या पद पावेंगे। तुमको सारा सा० होता रहेगा फिर उस समय ध्यान आवेगा कि ओफ्फ- यह भी हमने गफलत की। बाप तो फिर कह देते भावी। इनकी तकदीर में ही यही है तो क्या कर सक्ते है। रोज-2 समझाते रहते है खीर खण्ड बनो। गुस्सा नही करो तो पुरुषार्थ की करना है ऊंच पद

ओम